SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बौद्ध दार्शनिक अश्वघोष– एक अध्ययन

सिद्धार्थ शंकर सिंह, पी–एचडी, प्राचार्य
महाकवि कालिदास सूर्यदेव महाविद्यालय, त्रिमुहान, चंदौना, जिला– दरभंगा, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
सिद्धार्थ शंकर सिंह, पी–एचडी
E-mail : sidharthpcvm@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 04/10/2025
Revised on : 06/12/2025
Accepted on : 16/12/2025
Overall Similarity : 02% on 08/12/2025

शोध सार

अश्वघोष, बौद्ध धर्म के महान कवि और दार्शनिक हैं। बुद्धचरितम् इनकी प्रसिद्ध रचना है। कुषाण शासक कनिष्क के समकालीन कवि अश्वघोष का समय ईसवी प्रथम शताब्दी का अन्त और द्वितीय का आरम्भ समय है। इनका जन्म साकेत नगरी में हुआ था, जो अयोध्या के नाम से जानी जाती है। इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। एक परम्परा के अनुसार राजा कनिष्क पाटलिपुत्र के राजा को परास्त कर वहाँ से अश्वघोष को अपनी राजधानी पुरुषपुर जो वर्तमान पेशावर है को ले गए थे। अश्वघोष ने कनिष्क द्वारा बुलाई गई चतुर्थ बौद्ध धर्म की महान संगीति की अध्यक्षता की। ये बौद्ध दर्शन के सर्वास्तिवादी बौद्ध आचार्य थे, जिसका प्रमाण हमें सर्वास्तिवादी "विभाषा" में हमें मिलता है। ये प्रथमतः परमत को परास्त करनेवाले तेजस्वी महावादी दार्शनिक थे। इसके अतिरिक्त ये साधारण जनता और समाज को बौद्धधर्म के प्रति "काव्योपचार" से आकृष्ट करने वाले महान कवि भी थे। अश्वघोष, भारत के नहीं अपितु विश्व के महान दार्शनिकों में उनकी गणना की जाती है। उसका चिंतन उनकी विद्वत्ता और उनके ज्ञान की गंभीरता संपूर्ण बौद्ध साहित्य में एक अनुपम स्थान रखती है। उनके जैसा विद्वान संपूर्ण बौद्ध परंपरा में अत्यंत दुर्लभ है। भारतवर्ष की ज्ञान परम्परा का आदि स्रोत वेद और वैदिक साहित्यों में निहित है। भारत अपने ज्ञान के बल पर विश्वगुरु के उच्च सिंहासन पर आरूढ था। भारत की पावन धरा पर ज्ञान को सदैव मुक्ति का मार्ग समझा जाता रहा है। ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः[1] ज्ञान परम्परा की अविच्छिन्न धारा में बुद्ध की प्रासंगिकता असंदिग्ध है। बुद्ध भारत के इतिहास के ऐसे धरोहर हैं, जिसपर अखिल विश्व का अटूट विश्वास है। विश्व को शान्ति का सन्देश देने वाले गौतम बुद्ध राम और कृष्ण की तरह अवतारी पुरुष माने जाते हैं। भारतीय पौराणिक साहित्य उन्हें विष्णु के नवम अवतार के रूप में मानता

हैं। बौद्ध साहित्य व दर्शन के तो वे सर्वमान्य आधार ही हैं। अपनी रचनाओं में नायक के रूप में बुद्ध को स्थान देने वाले संस्कृत कवियों में अश्वघोष का विकल्प नहीं। अश्वघोष संस्कृत काव्य–धारा में बौद्ध परम्परा के पीयूष स्रोत हैं। उनकी कृतियाँ अमर हैं। अपनी कृतियों के अन्त में अश्वघोष ने यह वाक्य लिखा है– आर्यसुवर्णाक्षीपुत्रस्य साकेतस्यभिक्षोराचार्यस्यभदन्ताश्वघोषस्य महाकवेर्महावादिन कृतिरियम्' यह सिद्ध करता है कि अश्वघोष बौद्ध संन्यासी, बौद्धाचार्य और प्रख्यात उपदेशक थे। सुवर्णाक्षी के पुत्र, साकेत के निवासी, महावाग्मी, महाकवि, भिक्षु, आचार्य, भदन्त आदि अश्वघोष ने स्वयं के लिए प्रयुक्त किया है।

मुख्य शब्द

आचार्य, अश्वघोष, बौद्ध धर्म, दर्शन, वैदिक परंपरा, परिमार्जन.

प्रस्तावना

डॉ. सूर्य नारायण चौधरी ने अपने ग्रन्थ में अश्वघोष की महिमा का विशाल वर्णन किया है। अपने ग्रन्थ की भूमिका में उन्होंने कहा है– ''जिस पवित्र इक्ष्वाकु वंश में दाशरथी राम का जन्म हुआ था, उसी में शौद्धो–दनि सिद्धार्थ भी पैदा हुए थे।'' राम प्राग् ऐतिहासिक काल के हैं और सिद्धार्थ (= बुद्ध) आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले हुए थे। हजारों वर्षों से करोड़ों व्यक्ति प्रतिदिन राम और बुद्ध को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए अपने को पवित्र करते आ रहे हैं। राम ने कौटुम्बिक जीवन और सुराज्य का आदर्श उपस्थित किया, जबकि बुद्ध ने कुटुम्ब एवं राज–पाटको छोड़कर सत्य और सन्मार्ग का स्वयं दर्शन किया और लोगों को भी उसका उपदेश दिया। बुद्ध के परम भक्त साकेत–निवासी महाकवि अश्वघोष ने 'बुद्धचरित' नामक बुद्ध का जीवनचरित लिखा है। 'बुद्धचरित' एक उत्तम काव्य है, कलाकार की कृति है। इससे भी बढ़कर इसमें सन्मार्ग से भटके हुए लोगों के लिए कल्याण–कारी सन्देश है। कवि के शब्दों में ही ''मनुष्यों के हित व सुख के लिए, न कि विद्वत्ता या काव्य–कौशल दिखाने के लिए यह काव्य रचा गयाष। वास्तव में संस्कृत या पालि में बुद्ध की ऐसी सुन्दर जीवनी दूसरी देखने में नहीं आती।''[3] बुद्धचरित को उत्तरार्ध, जिसमें बुद्ध का परवर्ती जीवन–चरित – धर्मोपदेश एवं महार्पारनिर्वाण – चित्रित है, नष्ट हो गया, किंतु स्वतंत्र चीनी अनुवाद और अविकल तिब्बती अनुवाद में सम्पूर्ण बुद्धचरित सुरक्षित है।

भारत की बौद्धिक उन्नति, ज्ञान–मन्थन, गम्भीर गवेषणा, अद्‌भुत वाक्चातुर्य और विहंगम परीक्षण के साक्षी के रूप में अश्वघोष को विस्मृत नहीं किया जा सकता है। उनकी लेखिनी ने ''सामाजिक–धार्मिक बौद्धिक'' मान्यताओं में मौलिकता। नवीनता, आगत का समाधान और अनागत के लिए सुविचारित व्यवस्था प्रदान की। है। ज्ञान परम्परा के निर्माण, उन्नयन तथा अनुवर्तन–प्रवर्तन में अश्वघोष जैसी निर्भीक प्रतिभा, स्पष्टवादी विचारधारा और कुशाग्र दृष्टि अन्यत्र दिखाई नहीं देती। धर्म, समाज, जान तथा अधिकार के क्षेत्र की विसंगतियों का परिहार अश्वघोष ने अपनी रचनाओं के द्वारा संकेतित किया है। निश्चय ही अश्वघोष बौद्ध धर्म के प्रचारक, दार्शनिक तथा अत्युच्च कोटि के विद्वान् थे। क्रान्तिकारी बौद्धधर्मानुयायी होने पर भी संस्कृत साहित्यकारों की परम्परा का ही निर्वाह किया। संस्कृत कवियों की यह धारणा रही कि आत्म–प्रकाशन से बचा जाए और अपनी कृतियों में अपने विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं। महाकवि अश्वघोष ने भी स्वयं को आत्म–प्रकाशन से मुक्त रखा। इस प्रकार अश्वघोष परम्परावादी संस्कृत कवियों की धारणा एवं विश्वास के समर्थक रहे, फलस्वरूप अपनी कृतियों में स्वयं के वंश, कुल, गोत्र, परिवार, स्थान आदि के बारे में अधिक कुछ नहीं कहा। ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''[4] को आदर्श मानते हुए संभवतः माता से अत्यधिक लगाव व प्रेम होने के कारण सिर्फ अपनी माँ का नाम (सुवर्णाक्षी) तथा जन्मभूमि (साकेत) का स्पष्ट उल्लेख किया है। अश्वघोष के विषय में संस्कृत भाषा में प्राप्त जानकारी नगण्य है। चीनी तथा तिब्बती साहित्य में ही इनके बारे में कुछ विश्वसनीय तथ्य प्राप्त होते हैं। इनका नाम अत्यन्त श्रद्धा और भक्ति के साथ बौद्ध साहित्यों में प्राप्त होता है। संस्कृत काव्य परम्परा में अश्वघोष का स्थान आदरणीय है। इनकी कृतियों का अपना विशेष महत्त्व है। संस्कृत महाकाव्य की परम्परा का ज्ञान महाकवि अश्वघोष रचित काव्यों के बिना अपूर्ण है। अध्येताओं को संस्कृत साहित्य में यदि कालिदास की कवित्व प्रतिभा तक पहुँच बनानी है तो निश्चय ही उन्हें

अश्वघोष के काव्यों के मार्ग से गुजरना आवश्यक है। डॉ. भोला शंकर व्यास ने ठीक ही कहा है कि ''कालिदास की कवित्व–प्रतिभा के अध्ययन के लिए अश्वघोष का वही महत्त्व है, जो शेक्सपियर की नाट्य–प्रतिभा के अध्ययन के लिए मार्लो की नाट्य कृतियों का।''[5]

शोध भूमि

''महाकवि अश्वघोष संस्कृत के प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। अपने जीवन के विषय में उन्होंने कहीं कोई उल्लेख नहीं किया है। सौन्दरनन्द की पुष्पिका से इतना अवश्य पता चलता है कि इनकी माता का नाम 'सुवर्णाक्षी' था। पिता के नाम का पता नहीं चलता है। प्रारम्भ में अश्वघोष ब्राह्मण थे, बाद में बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गये थे। अश्वघोष बौद्ध–धर्मानुयायी कब और कैसे हुए इस सम्बन्ध में कुछ भी कहना कठिन है, क्योंकि कोई स्पष्ट तथ्य सामने नहीं है। इतना अवश्य है कि बौद्ध होने के पश्चात् भी ब्राह्मण धर्म के प्रति उनकी आस्था कम नहीं हुई। सौन्दरनन्द का समापन करते हुए अपने नाम से पूर्व माता के नाम का उल्लेख उनकी ब्राह्मण धर्म में आस्था को प्रकट करता है, क्योंकि बौद्ध लेखकों ने कहीं भी इस प्रकार मातृपूर्वक नामोल्लेख नहीं किया है। यह परम्परा हमें ब्राह्मण ग्रन्थकारों में ही देखने को मिलती है। श्रीहर्ष ने ''नैषधीयचरित'' महाकाव्य में प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में माता–पिता दोनों के नाम का स्मरण किया है। महाकवि अश्वघोष ने बौद्ध धर्म के प्रचार एवं प्रसार की भावना से ही अपने महाकाव्यों की रचना की थी। उनमें बौद्ध धर्म की व्याख्या भी प्रस्तुत थी, किन्तु अश्वघोष केवल बौद्ध धर्म के प्रति ही आस्थावान नहीं थे, अपित् उन दिनों में प्रचलित अनेक धार्मिक मान्यताओं को भी उन्होंने अपने काव्य मे प्रश्रय दिया। उनके महाकाव्यों में 'अग्निपूजा', 'सोम–प्रक्रिया', 'पशुबलि', 'संन्यास–धर्म', और 'साधु–प्रवृत्ति' का वर्णन किया गया है। शैव साधुओं, ष्वैष्णव संतोंष का वर्णन भी मिलता है। कवि के अनुसार तत्कालीन क्षत्रिय इन्द्र और कुबेर के उपासक थे।''[6]

अश्वघोष बौद्धाचार्यों में अग्रगण्य हैं। बौद्ध धर्म में महायान सम्प्रदाय को मजबूती प्रदान करने वाले आचार्य के रूप में जाने जाते रहे हैं। संस्कृत के महाकवि के रूप में संसार में प्रसिद्धि से पूर्व ही इनकी दार्शनिक कृतियों से जगत् परिचित हो चुका था। इनकी अनेक दार्शनिक कृतियों का चीनी, तिब्बती, जापानी आदि पूर्वी देशों की भाषाओं में अनुवाद हो चुका था। संस्कृत कवि और नाटककार के रूप में इनकी ख्याति बहुत बाद में फैली जब नवीन अनुसंधान सामने आए। आचार्य बलदेव उपाध्याय लिखते हैं कि ''1893 ई. के पहले अश्वघोष का नाम केवल बौद्ध दार्शनिकों की ही श्रेणी में स्थान पाता था।''[7] इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भले ही आज सारा संसार उनकी कवित्व प्रतिभा और नाट्य अभिव्यक्ति का साक्षात्कार कर रहा हो पर उन्नसवीं शताब्दी तक अश्वघोष संसार के लिए मात्र एक बौद्ध–आचार्य ही थे।

अश्वघोष के व्यक्तित्व का परिचय इनकी कृतियों के अध्ययन से प्राप्त हो जाता है साथ ही कई दन्त कथाओं में भी अश्वघोष के जीवन की घटनाओं जानकारी मिलती है। जैसा कि प्रारम्भ में ही कहा जा चुका है कि इनका जन्म साकेत अर्थात् वर्तमान अयोध्या में हुआ था और इनकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। इनके महाकाव्यों में अनेक बातें ऐसी मिलती हैं जो वैदिक परम्परा के अनुकूल है। कहा जाता है कि अश्वघोष का जन्म साकेत के एक शिक्षित ब्राह्मण कुल में हुआ था। बाल्य काल में इनकी शिक्षा–दीक्षा ब्राह्मण परम्परा के अनुसार सम्पन्न हुई थी। कालान्तर में ये बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए। बौद्ध धर्म की दीक्षा दिलाने में उस समय के प्रसिद्ध विद्वान् बौद्ध भिक्षु पार्श्व का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। बौद्ध भिक्षु पार्श्व का सम्बन्ध महाराज कनिष्क से था। महाराज कनिष्क के द्वारा संगठित चतुर्थ बौद्ध समिति के प्रधान सभापति पार्श्व ही थे। पार्श्व के शिष्य पूर्णयशस ने अश्वघोष को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी थी। बौद्ध धर्म में दीक्षित होने के बाद अश्वघोष ने अपना सम्पूर्ण जीवन और सारी शक्ति बौद्ध धर्म के प्रचार में लगा दिया। कहा जाता है कि अश्वघोष ने बौद्ध धर्म के गूढ़ रहस्यों को अत्यन्त मधुर भाषा में पाटलिपुत्र की सामान्य जनता को समझाना आरम्भ कर दिया। शाक्यमुनि के धर्म के प्रचार में अपनी बौद्धिक क्षमता, दार्शनिक चिन्तन, कवित्व शक्ति ही नहीं अपने अपूर्व संगीत ज्ञान का भी सहारा भी इन्होंने लिया। अश्वघोष का मधुर व्याख्यान सामान्य मानवों को ही नहीं पशु–पक्षियों को भी अद्भुत रूप से अपनी ओर आकृष्ट किया करता था। कहा जाता है कि इनकी मनोमुग्धकारी व्याख्यानों को सुनकर हिनहिनाता हुआ घोड़ा भी मौन हो इन्हें सुनने लगता था। ऐसी प्रसिद्धि है इनका

नाम 'अश्वघोष' भी इन्हीं आकर्षक व्याख्यानों के कारण पड़ा। अन्य कथा के अनुसार साकेत निवासी अश्वघोष पाटलिपुत्र में बौद्ध धर्म के प्रमुख प्रचारक थे। पाटलिपुत्र अर्थात् वर्तमान पटना में कनिष्क का आगमन हुआ। कनिष्क अश्वघोष से अत्यन्त प्रभावित हुए और इन्हें अपनी राजधानी पुरुषपुर बुलाया। अश्वघोष वहाँ पहुँचे और कनिष्क को बौद्ध धर्म की दीक्षा देकर शिष्य बना लिया। यह पुरुषपुर वर्तमान पाकिस्तान स्थित पेशावर शहर है। अश्वघोष ने अपनी शेष आयु कनिष्क को बौद्ध धर्म के उपदेश देने में पेशावर में ही व्यतीत की।

एक प्रचलित कथा के अनुसार कनिष्क ने मगध–राज्य पर आक्रमण करके राजा के समक्ष दो माँगें रखीं। प्रथम बुद्ध का प्रसिद्ध भिक्षा पात्र और द्वितीयकवि अश्वघोष को पुरुषपुर ले जाना। अत्यधिक कष्ट से मगधराज ने दोनों माँगे मान ली। अश्वघोष पाटलिपुत्र छोड़ कर कनिष्क के साथ चले गये। बौद्ध धर्म की संगति का संचालन किया। कनिष्क के आध्यात्मिक उपदेशक बनकर अपना शेष जीवन वहीं बिताया। इस कथा से स्पष्ट है कि अश्वघोष कनिष्क के समकालीन थे। विद्वानों की मान्यता है कि 78 ई. से प्रचलित शक सम्वत् प्रारम्भ करने वाला कनिष्क ही था। इससे कहा जा सकता है कि कनिष्क का समकालीन होने के कारण कवि अश्वघोष का समय प्रथम शताब्दी ई. मान लेने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

डॉ. उमा शंकर शर्मा ऋषि अपने ग्रन्थ ''संस्कृत साहित्य का इतिहास'' में अश्वघोष को कनिष्क का समकालीन मानते हुए स्पष्ट कहा है– ''शारिपुत्र–प्रकरण की पाण्डुलिपि से भी यह सिद्ध होता है कि अश्वघोष कनिष्क के समकालौन थे साथ ही पाश्चात्य विद्धान ओल्डनबर्ग, फर्गुसन आदि और कई भारतीय विद्वानों की मान्यता को रेखांकित करते हैं कि अश्वघोष कनिष्क के समकालीन थे और प्रथम शताब्दी के उत्तरार्दध में इनका समय था। 'आर्यमंजुश्रीमूलकल्प' के अनुसार अश्वघोष अस्सी वर्षों तक जीवित रहे। इस तथ्य का न तो किसी न समर्थन किया है और न ही खण्डन, अतः स्वतः प्रमाण मानकर इसे स्वीकार किया जा सकता है।''[8]

महाकवि अश्वघोष का व्यक्तित्व महनीय है। इस प्रकार का व्यक्तित्व निश्चय ही असाधारण प्रतिभा का धनी होता है। सौन्दरनन्दम् के अवलोकन के बाद यह तो सिद्ध है कि अश्वघोष का पाण्डित्य प्रौढ़ और बहुमुखी है। भारतीय काव्यशास्त्रीय परम्परा में कहा जाता है कि शक्ति, अभ्यास और निपुणता के बिना काव्य का निर्माण नहीं हो सकता। अगर दैववश निर्माण हो भी जाए तो उपहास के अतिरिक्त कुछ प्राप्त नहीं होता। इन मान्यताओं के आलोक में जब कवि अश्वघोष की कृतियों पर दृष्टिपात करते हैं तो सद्यः यह प्रतीत होता है है कि अश्वघोष न केवल प्रतिभाशाली हैं अपितु अभ्यास और निपुणता भी उनमें झलकती है। काव्यशास्त्रीय परम्परा में शक्ति को काव्य–रचना का बीजभूत संस्कार कहा गया है। यही प्रतिभा है। जैसा पूर्व में ही कहा जा चुका है कि इसके बिना काव्य की रचना हो ही नहीं सकती। हठात् हो भी जाती है तो उपहास के योग्य ही होती है। यह प्रतिभा या शक्ति मुख्यतः दो प्रकार की होती है– सहजा और उत्पाद्या। कवि पाण्डित्य के लिए सहजा प्रतिभा आवश्यक मानी जाती है। इस सहजा प्रतिभा के द्वारा सुस्थिर चित्त में अनेक प्रकार के वाक्यार्थ का स्फुरण होता है। कठिनतारहित पदों का भान होता है। काव्य रचना के समय में अनेक शब्द और अर्थ हृदयस्थ हो जाते हैं। सौन्दरानन्दम के उपदेश से यह सर्वथा सिद्ध होता है कि कवि अश्वघोष की प्रतिभा सहजरूपिणी है। प्रसिद्ध काव्यशास्त्री रुद्रट का मानना है– ''मनसि सदा सुसमाधिनि विस्फुरमाणेकधा विधे यस्य। अक्लिष्टानि पदानि च विभन्ति यस्यामसौ शक्तिः।''[9]

महाकवि अश्वघोष न केवल प्रतिभासम्पन्न हैं, वे आदर्श कवि हैं। काव्य के रहस्य में रहस्य आवश्यक है। सौन्दरनन्दम् में कवि की मासूमता सर्वत्र पहचान होती है। डिज़ेक्टता के कई साधन होते हैं। यथा श्रुति, स्मृति, पुराण, नाट्यशास्त्र, कामशास्त्र, योगशास्त्र, आयुर्वेद, छंद, व्याकरण, अभिधानकोश, चतुष्टिष्टः कला, चतुर्वर्ग साधन, रत्न–परीक्षा, गज, अश्वशास्त्र आदि विघ्द्याओं के ग्रंथों का अध्ययन तथा अनुशीलन साथ ही काव्य, काव्य विषयक और इतिहास से संबंधित ग्रंथों का अध्ययन अध्ययन के लिए आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त स्थावर, जंगम आदि के लोकव्यवहार का ज्ञान प्राप्त करना भी कवियों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। काव्य के लिए उपयोगी मनोरंजकता के विभिन्न संगीतकारों से सचेष्ट कवि नहीं होता। विभिन्न कवियों के लिए विभिन्न विषयों का ज्ञान अप्रचलित होता है। अश्वघोष कवि की प्रेमिका में ये सभी तत्त्व प्रकट होते हैं। अश्वघोष की रचनाएँ ही उनके रहस्यमय होने की

गाथा हैं। भारतीय सिद्धांत के सन्दर्भ में बताया गया है कि ''न स शब्दो न तद्वच्यं न स न्यायो न सा कला। जयते यन्न काव्यङ्गमहो भरो महें कवेः।।''[10]

संस्कृत काव्य संसार में महाकवि अश्वघोष की प्रसिद्धि दार्शनिक कवि के रूप में सर्वमान्य है। काव्य और दर्शन का अद्भुत, उदात्त और अनुपम समन्वय उनकी रचनाओं में विद्यमान है। अश्वघोष की प्रसिघद्धि बौद्ध संन्यासी, बौद्धाचार्य और प्रख्यात उपदेशक के रूप में विख्यात है। सुवर्णाक्षी के पुत्र, साकेत के निवासी, महावाग्मी, महाकवि, भिक्षु, आचार्य, भदन्त आदि अश्वघोष ने स्वयं के लिए प्रयुक्त किया है। अश्वघोष भारतीय शासक कुषाणवंशीय कनिष्क के धर्मगुरु के रूप में भी जगत्प्रसिद्ध हैं। अश्वघोष को सामान्यतः कुषाण नरेश कनिष्क का समकालीन माना जाता है। पहले ही कहा जा चुका है कि अनेक कथाएँ कनिष्क और अश्वघोष से सम्बन्धित प्रचलित हैं। पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने कनिष्क का समय प्रथम शताब्दी ई. का उत्तरार्ध स्वीकार किया है। 78 ई. से प्रचलित शक संवत् का आरम्भ कनिष्क के द्वारा किया गया था। इस स्थिति में अश्वघोष का स्थितिकाल प्रथम शताब्दी ई. सर्वमान्य है।

बौद्ध कवि अश्वघोष का काव्य संसार विस्तृत व विपुल है। बौद्ध धर्म का उपदेश देने के लिए ही अश्वघोष ने काव्य रचना की है। उनकी रचनाओं में वैविध्य है। अभी भी उनकी अनेक रचनाएँ भारत में अप्राप्य हैं। दार्शनिक अश्वघोष के नाम से कई रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। यह निर्णय करना तनिक कठिन है कि सौन्दरनन्दम् के रचयिता कवि अश्वघोष की और कौन–कौन सी अन्य रचनाएँ हैं। अखिल विश्व उनकी जिन रचनाओं से साक्षात्कार कर चुका है उसकी भी एक लम्बी श्रृंखला हैं। विभिन्न विधाओं में अश्वघोष की रचनाएँ प्राप्त होती हैं। वर्तमान समय में अश्वघोष कवि रचित निम्नलिखित रचनाएँ सर्वमान्य हैंः

1. **बुद्धचरितम्**ः महाकवि अश्वघोष की यह अमर कृति है। इसमें 28 सर्ग हैं। विधा की दृष्टि से यह महाकाव्य है। अश्वघोष गौतम बुद्ध के उज्ज्वल यश को बुद्धचरितम् के माध्यम से दिग्दिगन्त तक विस्तारित किया है। यह महाकाव्य गौतमबुद्ध की जीवन यात्रा का काव्य निरूपण है।
2. **सौन्दरनन्दम्**ः महाकवि अश्वघोष का यह द्वितीय महाकाव्य है। इसमें 18 सर्ग हैं। सौन्दरनन्दम् महाकाव्य मात्र संस्कृत भाषा में ही प्राप्त हुआ है। अश्वघोष ने अपने महाकाव्य में अपूर्व कला प्रज्ञा, वैदग्ध पूर्ण कल्पना और लोकविश्रुत बहुजता का दर्शन किया है। लोकविश्रुत कथावस्तु के कवि ने बहुविध कथाओं के कथानक और स्वतःस्फूर्त अवान्तर कथाओं के संयोजन से कथाप्रवाह की अनुयायियों को अक्षुण्ण बनाने की सफल चेष्टा की है। अन्याय सौन्दरनंदम् विचारप्रधान महाकाव्य है।
3. **शारिपुत्रप्रकरणम्**ः अश्वघोष कृत यह रचना नौ अंकों से समन्वित प्रकरण है, जो नाट्यशास्त्र के नियमानुकूल है। वस्तुतः अश्वघोष की इस नाट्यकृति में बौद्धधर्म में शारिपुत्र की दीक्षा का वृतान्त वर्णित है। इसमें मध्यमवर्ग के चित्रण के साथ जुआरी, शराबी, वेश्याओं, चोर उचक्कों का चरित चित्रित है। सम्प्रति यह ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। बुद्धचरितम्, सौन्दरनन्दम् और शारिपुत्रप्रकरणम् में भावों, विचारों और शब्दावलियों में अत्यन्त साम्यता है।
4. **गण्डीस्तोत्रगाथाः** यह एक गीति काव्य है। विधा की दृष्टि से इसे खण्डकाव्य कहा जा सकता है। इस काव्य में 29 गाथाएँ हैं। अनेक विद्वान् इस ग्रन्थ को अश्वघोष की रचना नहीं मानते परन्तु प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. कीथ श्गण्डीस्तोत्रगाथा को अश्वघोष कवि की ही कृति मानते हैं।
5. राष्ट्रपालनाटक इस ग्रन्थ के रचयिता अश्वघोष हैं। सम्प्रति यह ग्रन्थ चीनी भाषा में प्राप्त होता है। यह गेय नाटक है। इसके कुछ उदाहरण संस्कृत ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं।

साहित्य जगत में कई अन्य ग्रन्थों की भी रचना अश्वघोषकवि द्वारा की जाती है। यथा वज्रसूची, सूत्रालंकार, नैरात्मपरिपृच्छा, त्रिदण्डमाला, शतपंचाष्टकस्तोत्र, महायान श्रद्धोत्पादशास्त्र आदि। अनेक विद्वानों का मत है कि ये ग्रन्थ अश्वघोष के नहीं हैं। संक्षेप में इन ग्रन्थों में दृष्टिपात आवश्यक हैः

1. **वजसूचीः** इस ग्रन्थ में वर्णव्यवस्था की कटु आलोचना की गई है। दसवीं शताब्दी में इस ग्रन्थ का चीनी अनुवाद किया गया है। अधिकांश विघ्द्वानों का मानना है कि यह अश्वघोष की कृति नहीं है।

2. **सूत्रालंकारः** यह नैतिक गाथाओं और कहानियों का संग्रह ग्रन्थ है।
3. **नैरात्मपरिपच्छाः** यह ग्रन्थ बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है। डॉ. उमा शंकर शर्मा ने इसे महायान तत्त्वमीमांसा का ग्रन्थ कहा है जो संस्कृत भाषा में है। उन्होंने इसे अश्वघोषकृत स्वीकार किया है।
4. **त्रिदण्डमालाः** विद्वानों ने इसे अश्वघोष की रचना स्वीकार की है। राहल सांकृत्यायन को तिब्बत के पोखंग मठ में इसकी प्रति प्राप्त हुई है। यह ग्रन्थ भाषण कला की शिक्षा से सम्बन्धित है। यह संस्कृत भाषा में निबद्ध है।
5. शतपंचाशत्कस्तोत्र तिब्बती अनुवाद में इस रचना को अश्वघोष की कृति माना गया है। मूलतः यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा में है। कई विद्वान् इसे मातृचेट की रचना मानते हैं।
6. **महायान श्रद्धोत्पादशास्त्रः** यह ग्रन्थ हीनयानी बौद्धों की दार्शनिक अजानता के निवारण के लिए तथा परमार्थ सत्य को विस्तृत रूप में अभिव्यक्त करने के लिए लिखा गया है। चीनी भाषा में प्राप्त इस ग्रन्थ का अनुबाद अंग्रेजी भाषा में प्रो. सुजुकी ने किया है। वह इसे अश्वघोष की रचना मानते हैं। इस ग्रन्थ में विज्ञानबाद और माध्यमिक सिद्धान्तों का समन्वय है। शून्यवादी विचारधारा का सूक्ष्म संकेत भी प्राप्त होता है। भारतीय विद्वान इसे अश्वघोष की रचना नहीं मानते हैं।

निष्कर्ष

भारतीय बौद्ध दर्शन परंपरा में अश्वघोष का स्थान बहुत ही उज्ज्वल और महनीय है। ऐसे विघ्द्वान इस धरती पर यत्र–तत्र ही जन्म लेते हैं। अश्वघोष ने अपने काव्य के माध्यम से अपनी जिस प्रतिभा का प्रदर्शन किया है ऐसी प्रतिभा अत्यंत दुर्लभ है। अश्वघोष को समझने के लिए उनके द्वारा रचे गए काव्य का यदि हम सम्यक रूपेण अनुसंधान करें तब हमें अश्वघोष की प्रतिभा का पता चलता है। अश्वघोष ने बौद्ध धर्म की स्थापना के लिए जो महान कार्य किया है ऐसा कार्य परम् दैवीय है। भगवान बुद्ध की शिक्षाओं से लेकर उनके जीवन चरित्र को बहुत उत्तम रूप से रेखांकित करने का कार्य अश्वघोष ने अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। अश्वघोष के समानांतर बारले ही ऐसे विघ्द्वान हैं जिन्होंने बौद्ध धर्म की कवित्वमयी शक्ति से ऐसी उत्कट मीमांसा की है। अश्वघोष की विद्वता बहुआयामी है। निश्चित रूप से यही बात है सुकवि व काव्य मर्मज हैं। कवित्व के हेतु उनमें विद्यमान हैं। निश्चय ही अश्वघोष ने साहित्य साधना के लिए अभ्यास किया है। प्रतिभा तो नैसर्गिक है ही उनमें। निपुणता अश्वघोष के ग्रन्थों में स्पष्ट दिखाई देता है। अपनी कविताओं में अश्वघोष ने नवीन भावों और कल्पना मण्डित अनुभूतियों के माध्यम से मर्मस्पर्शी चित्रों का सजीव निरूपण किया है। अश्वघोष साहित्य सृजन में वाल्मीकि, व्यास आदि के अनुगामी हैं। अश्वघोष की रचनाओं में साहित्यिक रस साधन के रूप में है प्रयुक्त हुआ है साध्य रूप में नहीं। यह उनके सुकवि होने का परिचायक है। शान्त, श्रृंगार, वीर, अद्भुत इत्यावि साहित्यिक रसों का आस्वादन अश्वघोष के पाठकों को अनायास होने लगत है। रस, रीति, अलंकार आदि के प्रयोग में कवि ने प्रचलित परम्परा का निर्वाह किया है। सफल काव्य मर्मज के रूप में अश्वघोष ने आर्ष ग्रन्थों व सर्वमान्य तथ्यों को अपनी रचना में कुशलता से उपस्थापित किया है। यथा–नगर, आश्रम, हिमालय आदि के वर्णन में आदिकाव्य रामायण से प्रभावित हैं, भाव साम्यता में श्रीमद्भगवद् गीता के अनुयायी हैं साथ ही उपनिषदों क प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। एक काव्यमर्मज ही नीर क्षीर विवेक से अपन लिए उपयोगी तथ्यों को हृदयंगम कर सकता है और अश्वघोष ने ऐसा ही किया है।

सन्दर्भ सूची

1. हिरण्यकेशी शाखा (कृष्ण यजुर्वेद)
2. श्री अश्वघोष विरचित सौन्दरनन्द महाकाव्य / सूर्यनारायण चौधरी / मोतीलाल–बनारसीदास पटना / संस्करण, 1980 पृष्ठ 260
3. अश्वघोष कृत बुद्ध चरित्र संपादक और अनुवादक डॉक्टर सूर्यनारायण चौधरी । मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशन प्राइवेट, लिमिटेड एडिशन, 2022 ISBN:9789390064199

4. वाल्मीकि रामायण 6/124/1
5. संस्कृत कवि दर्शन / चौखंबा विघ्द्या भवन वाराणसी / डॉ. भोला शंकर व्यास / पृष्ठ 70
6. अश्वघोष के महाकाव्यों में प्रयुक्त क्रिया–पदों का भाषा–वैज्ञानिक अध्ययन / डॉ साधना सहाय / विश्वभारती पब्लिकेशन दिल्ली/ प्रकाशन वर्ष 2010 ISBN:9788189917937/ पृष्ठ संख्या 01 (भूमिका)
7. संस्कृत सुकवि समीक्षा / प्रकाशन वर्ष 2008/ चौखंबा विघ्द्या भवन वाराणसी/ आचार्य बलदेव उपाध्याय / पृष्ठ 121
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास / डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि / पृष्ठ– 229
9. काव्यालंकार / प्रकाशन चौखंबा विघ्द्या भवन बाराणसी / रुद्रट/ 1/15
10. काव्यालंकार / प्रकाशन– चौखंबा विघ्द्या भवन वाराणसी/ रुद्रट/ 5/4

****